दसवाँ दीक्षान्त समारोह

24 दिसम्बर, 2016

विश्वविद्यालय प्रतिवेदन

द्वारा

डॉ. उमा शंकर शर्मा

कुलपति

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
उदयपुर (राज.)

24 दिसम्बर, 2016 को महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के दसवें दीक्षान्त समारोह पर माननीय कुलपति द्वारा प्रतिवेदन

माननीय राज्यपाल, राजस्थान सरकार एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रीमान् कल्याण सिंह जी, माननीय श्री प्रभुलाल सैनी, कृषि मंत्री, राजस्थान सरकार, माननीय श्री गुलाबचन्द जी कटारिया, गृहमंत्री, राजस्थान सरकार, श्री अजय शंकर पाण्डेय, विशेषाधिकारी, प्रबन्धन मण्डल तथा अकादमिक परिषद् के सदस्य, आमंत्रित अतिथि, संकाय सदस्य, विद्यार्थीगण, मीडिया बन्धु, देवियों एवं सज्जनों।

मुझे माननीय कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह जी के राज्यपाल पद पर आसीन होने के बाद विश्वविद्यालय में तीसरी बार आगमन पर स्वागत करते हुए अत्यन्त हर्ष व उल्लास का अनुभव हो रहा है। यद्यपि माननीय श्री कल्याण सिंह जी के लिए किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है किन्तु यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं आप श्री के विषय में कुछ शब्द कहूं। माननीय राज्यपाल मूलतः उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के मधोली गाँव के रहने वाले हैं। आपका जन्म 5 जनवरी, 1932 को एक कृषक परिवार में हुआ। स्नातक तथा शिक्षक शिक्षण कार्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात् माननीय राज्यपाल महोदय ने 3 वर्षों तक शिक्षण कार्य किया। तत्पश्चात् आपका राजनीतिक जीवन वृत्त 1967 से आरम्भ हुआ और 6 बार आप उत्तर प्रदेश के विधायक बने। आपने 1977 में उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री तथा दो बार मुख्यमंत्री के पद को सुशोभित किया। माननीय राज्यपाल दो बार उत्तरप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के राज्य अध्यक्ष तथा दो बार भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी रहे। आप 2004 से 2014 तक सांसद रहे।

हम सौभाग्यशाली हैं कि आज हमारे बीच दसवें दीक्षान्त समारोह जैसे पुनीत अवसर पर कुलाधिपति स्वरुप सर्वतोमुखी व्यक्ति विराजमान है। विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा में गुणवत्ता, प्रभावपूर्ण शोध, अनुशासन तथा प्रतिबद्धता के प्रति माननीय राज्यपाल की चिंता राजभवन से प्राप्त क्रमबद्ध सम्प्रेषण से प्रत्येक स्तर पर परिलक्षित होती है। माननीय राज्यपाल दीक्षान्त

समारोह के निरन्तर आयोजन के प्रति कटिबद्ध हैं तथा सभी विश्वविद्यालयों के वार्षिक शैक्षिक कलेण्डर में नियमित दीक्षान्त समारोह की तिथि सम्मिलित करने हेतु निर्देश दे चुके हैं।

विश्वविद्यालय दीक्षान्त समारोह हमारे शिक्षित युवाओं के लिये एक ऐसा अवसर है जो उनकी शैक्षिक सफलता को परिलक्षित करता है तथा उनके वृति निर्माण हेतु भविष्य के लिये मार्ग प्रशस्त करता है। हमारा विगत् दीक्षान्त समारोह 23 दिसम्बर, 2015 को हुआ था। आज के दीक्षान्त समारोह में दिसम्बर, 2015 से नवम्बर, 2016 के दौरान योग्य पाये गये 554 स्नातक, 161 स्नातकोत्तर तथा 43 विद्या–वाचस्पति विधार्थियों को उपाधि प्रदान की जायेगी, साथ ही 42 वरीयता प्राप्त छात्रों को स्वर्ण पदक से सुशोभित किया जायेगा। एक स्वर्ण पदक विश्वविद्यालय स्तर पर आपकी अनुशंसा के आधार पर दिया जा रहा है। मैं अन्तरमन से आप सभी को बधाई देता हूँ। विगत दीक्षान्त समारोह के पश्चात् विश्वविद्यालय ने शिक्षण, शोध एवं प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियाँ हासिल की हैं। यह मेरे लिये हर्ष का विषय है कि इस अवसर पर विश्वविद्यालय की विशिष्ट उपलब्धियों से आपको अवगत कराऊं, जो कि इस जनजाति बाहुल्य क्षेत्र के ग्रामीण समुदाय की उन्नति एवं खुशहाली के लिये सामाजिक कर्त्तव्य के रूप में विश्वविद्यालय के सम्बन्धित इकाइयों द्वारा हासिल की गयी है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

वर्तमान में विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों एवं इकाइयों में 14 स्नातक, 28 स्नातकोत्तर तथा 25 विद्या–वाचस्पति स्तरीय कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। हम नवीनतम् पाठ्यक्रम, कक्षाकक्ष व प्रयोगशाला में उत्कृष्ट शिक्षण तथा क्षेत्र स्तरीय अधिगम की पालना करते हैं। यह बताते हुए अत्यंत हर्ष है कि मानव संसाधन विकास विभाग द्वारा 2016 में जारी राष्ट्रीय रेंकिंग में हमारे तकनीकी एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालय को 82वीं रेंक तथा राजस्थान में तीसरी रेंक प्राप्त हुई है।

पाठ्यक्रम पुनरावलोकन : स्नातक, स्नातकोत्तर तथा विद्या–वाचस्पति पाठ्यक्रम का वृहद् स्तर पर पुनरावलोकन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा किया गया तथा विश्वविद्यालय के समस्त पाठ्यक्रमों में आगामी शैक्षणिक सत्र से पंचम अधिष्ठाता समिति की सिफारिशों का समावेश किया जायेगा।

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा हेतु पहल : माननीय राज्यपाल द्वारा निर्देशित 8 प कार्यक्रम को उसकी मूल भावना के साथ विश्वविद्यालय में अक्षरशः लागू किया गया है। विश्वविद्यालय में प्रवेश, उपस्थिति, व्याख्यान परिसूचि, परिणाम आदि को समन्वित विश्वविद्यालय प्रबन्धन पद्धति को समग्रता में ऑनलाइन प्रारम्भ किया गया है। गुणवत्ता में वृद्धि हेतु महाविद्यालयों में ई–लर्निंग, सूचना संप्रेषण तकनीकी, प्रायोगिक पाठ्यक्रम में पुनः सुधार, विषय विशेषज्ञों के उद्‌बोधन, जे.आर.एफ. एवं एस.आर.एफ. परीक्षाओं के लिए विशिष्ट कक्षाएँ, रेगिंग मुक्त परिसर व शैक्षणिक कैलेण्डर की पालना मुख्य गतिविधियाँ हैं।

विविध प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यार्थियों का प्रदर्शन : वर्ष 2015–16 में राजस्थान कृषि महाविद्यालय के 4 विद्यार्थियों ने जे.आर.एफ. उत्तीर्ण किया। तकनीकी एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालय, उदयपुर के 50 से अधिक विद्यार्थियों का चयन गेट व केट परीक्षाओं में हुआ। डेयरी एवं खाद्य विज्ञान प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के 15 विद्यार्थी वर्ष 2016 में जे.आर.एफ. के लिए योग्य पाये गये।

ढांचागत विकास : विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम का नवीनीकरण, प्रभावी शिक्षण प्रणाली के साथ–साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु ढांचागत विकास को भी प्राथमिकता दी जाती है। इनमें विभिन्न सम्बन्धित महाविद्यालयों में शैक्षणिक प्रक्षेत्रों व प्रयोगशालाओं का आधुनिकरण, स्मार्ट कक्षाकक्ष का विकास, अत्याधुनिक उपकरणों की उपलब्धि, कक्षाकक्षों में दृश्य–श्रव्य तकनीकी का उपयोग, प्रभावी व्याख्यान, विद्यार्थियों की निगरानी हेतु सी.सी.टी.वी. कैमरों की स्थापना एवं सीटीएई में 100 के.वी. सोलर प्लांट की स्थापना आदि मुख्य हैं।

शीतकालीन/ग्रीष्मकालीन स्कूल : इस सत्र में विश्वविद्यालय द्वारा जैविक कृषि, कृषि में कौशल विकास, शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क क्षैत्रों में अपर्याप्त उपयोग वाले फलों का प्रबन्धन तथा ''शैक्षणिक तकनीकों में नवाचार'' पर चार ग्रीष्म व शीतकालीन स्कूलों का आयोजन किया गया जिन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया।

पुस्तकालय प्रोन्नयन : विश्वविद्यालय के डॉ. अमर सिंह राठौड़ केन्द्रीय पुस्तकालय का नवीन पुस्तकों एवं शोध पत्रिकाओं द्वारा सुदृढ़ीकरण किया गया। डिजिटल पुस्तकालय सुविधा में केब एब्सट्रेक्ट्स, सीडी रोम सेक्शन सम्मिलित किये गये, जिनमें एक समय में 6 विद्यार्थी कार्य कर सकते हैं।

कम्प्यूटरों में स्टॉफ एवं विद्यार्थियों द्वारा एकत्रित साधन–सामग्री की सॉफ्ट कॉपी डाउनलोड करने की सुविधा प्रदान की गयी है। सीरा एवं केब एब्सट्रेक्ट्स के माध्यम से ऑनलाईन इलेक्ट्रोनिक जर्नल हेतु इंटरनेट सुविधा दी गयी है। संक्षेप में पुस्तकालय में नई पुस्तकों के समावेश के साथ कुल 79,334 पुस्तकें हो गयी हैं। सीरा द्वारा ऑनलाईन शोध पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं। विगत् वर्षों में तकनीकी एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालय के पुस्तकालय में 734 पुस्तकें 43 जर्नल, 75 ई–जर्नल शामिल किये गये। डेयरी एवम् खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में 254 पुस्तकें, कम्प्यूटर एवम् वाईफाई सुविधा उपलब्ध करवाई गई।

छात्र कल्याण निदेशालय गतिविधियाँ :

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर का छात्र कल्याण निदेशालय विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास एवं बहुआयामी व्यक्तित्व निखार के लिए शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ अन्य गतिविधियों हेतु सतत् प्रयासरत है। निदेशालय द्वारा समय–समय पर किये जाने वाले प्रयासों में मुख्य रूप से खेलकूद, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं रंगमंचीय गतिविधियों के अलावा भी छात्रों के मानसिक, शारीरिक एवं सर्वांगीण विकास हेतु व्यवसायिक, नैतिक मूल्यों और मनोबल को बढ़ाने वाले कार्यक्रमों का भी आयोजन पिछले वर्षों से लगातार किया जाता रहा है।

छात्र कल्याण अधिकारी एवं मुख्य चुनाव अधिकारी द्वारा दिनांक 17 अगस्त, 2016 को लिगंदोह समिति के नियमों के अन्तर्गत विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्र संघ चुनाव बिना किसी व्यवधान के सम्पन्न करवाए गये। उसके पश्चात् माह सितम्बर में हिन्दी दिवस मनाया गया जिसमें 14 सितम्बर, 2016 को विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय के विद्यार्थियों की वाद–विवाद प्रतियोगिता एवं दिनांक 16 सितम्बर, 2016 को कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन छात्र कल्याण अधिकारी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ एवं महाविद्यालय स्तर पर हिन्दी दिवस पखवाड़ा मनाया गया जिसमें विद्यार्थियों ने पूर्ण उत्साह व उमंग से भाग लेते हुए अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते हुए पुरस्कार जीते। दिनांक 12 जनवरी, 2016 को छात्र कल्याण निदेशालय एवं दिव्य भारत युवा संघ के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी विवेकानन्द की जन्म जयन्ति पर

(राष्ट्रीय युवा दिवस) युवा उत्कर्ष–2016 कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 6 व 7 जून, 2016 को वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जन्म जयन्ति के उपलक्ष्य पर व्याख्यान एवं पुष्पान्जली का विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजन किया गया। 25 सितम्बर, 2016 को पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जयन्ति पर सामूहिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 76 यूनिट ब्लड आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज के ब्लड बैंक को दिया गया।

इसी क्रम में छात्र कल्याण निदेशालय एवं केन्द्रीय छात्र संघ के तत्वावधान में गृह विज्ञान महाविद्यालय के खेल प्रागंण पर छात्राओं के लिए आत्मरक्षा (सेल्फ डिफेन्स) शिविर एवं सेमिनार का आयोजन भी किया गया।

एन.एस.एस. की सी.टी.ए.ई. ईकाई के विद्याथियों ने एल.डी. अभियान्त्रिकी महाविद्यालय में एन.आई.सी. कार्यकर्ताओं ने शिविर में भाग लिया। ए.एल.सी. शिविर अहमदाबाद में आयोजित हुआ, जहाँ सी.टी.ए.ई. ईकाई के आठ कैडेटों ने भाग लिया। सिघांनिया विश्वविद्यालय, उदयपुर में आयोजित एन.आई.सी. छात्रा एन.सी.सी. कैडेट ने भाग लेते हुए 10 राज बटालियन की जनरल चैम्पियनशिप जीती। एन.एस.एस. एवं एन.सी. सी. के विभिन्न शिविरों में छात्रों की भागीदारी विश्वविद्यालय के गौरव को बढ़ाने वाली रही। गणतंत्र दिवस पर नई दिल्ली में आयोजित होने वाली परेड के लिए भी हमारे विश्वविद्यालय के एन.सी.सी. कैडेटस प्री.आरडी. शिविर में चयन हेतु भाग लेते रहे हैं। हर वर्ष विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय पर्व 15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस एवं 26 जनवरी, गणतंत्र दिवस, पर छात्रों की भागीदारी, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन, परेड की तैयारी ध्वजारोहण अवतरण कार्यक्रम की सम्पूर्ण व्यवस्था छात्र कल्याण निदेशालय द्वारा ही निष्पादित की जाती है ।

छात्र कल्याण निदेशालय के तत्वाधान में दिनांक 1 से 4 फरवरी, 2016 को भुवनेश्वर में आयोजित अखिल भारतीय अन्तर कृषि विश्वविद्यालय एग्री यूनिफेस्ट प्रतियोगिता में हमारे विश्वविद्यालय के 22 चयनित सदस्य विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं रंगमंचीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा कई पदक व पुरस्कार जीत कर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया।

अन्तर महाविद्यालय युवा महोत्सव "उत्कर्ष–2016" का आयोजन 11 से 13 अप्रेल, 2016 तक किया गया। जिसमें सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं रंगमंचीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

क्रीड़ा मण्डल की गतिविधियाँ : हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अन्तर महाविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता के प्रथम चरण का आयोजन विश्वविद्यालय क्रीड़ा मण्डल के तत्वावधान में दिनांक 18 से 20 अक्टूबर, 2016 तक किया गया। प्रथम चरण के आयोजन में बास्केटबॉल, शतंरज बेडमिंटन, टेबल टेनिस, कुश्ती एवं टेनिस प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। अन्तर महाविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ माननीय कुलपति द्वारा सी.डी.एफ.एस.टी. महाविद्यालय के नवनिर्मित बास्केटबाल कोर्ट के उद्घाटन के साथ हुआ।

22 से 26 फरवरी, 2016 तक कोयम्बटूर में आयोजित अखिल भारतीय अन्तर कृषि विश्वविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता एग्रीस्पोर्टस में भी विश्वविद्यालय के 40 सदस्यी दल ने भाग लिया जिसमें विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों की टेनिस टीम ने द्वितीय स्थान पर रहते हुए रजत पदक प्राप्त किया। छात्रा वर्ग की तश्तरी फैंक प्रतियोगिता में कास्य पदक जीत कर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया, वहीं बास्केटबॉल व बैडमिंटन टीमों ने अच्छा प्रदर्शन कर सेमीफाइनल तक पहुँची।

परिसर साक्षात्कार एवं सूचना ब्यूरो : वर्ष 2016–17 में छात्रों एवं छात्राओं के नियोजन हेतु विश्वविद्यालय में कार्यरत ईकाईयों द्वारा परिसर साक्षात्कार एवं सूचना ब्यूरो के अर्न्तगत सी.टी.ए.ई. की ईकाई द्वारा साक्षात्कार परिसर व परिसर के बाहर, विभिन्न कम्पनियों एवं सरकार द्वारा आयोजित किये गये जिसमें 165 छात्र–छात्राओं को नियोजित किया गया, जिनमें प्रमुख कम्पनियाँ रिलाइन्स जीओ, विप्रो, टी.सी.एस., इन्फ्रासॉफ्ट, हिन्दुस्तान जिंक वेदांता, स्कॉइमेंट, सोनालिका, जे.के. टायर, महिन्द्रा एवं इण्डियन आर्मी आदि सी.डी.एफ.एस.टी. में परिसर साक्षात्कार द्वारा 55 छात्रों का नियोजन डेयरी, खाध एवं बायोटेक में – नेसले, आर.सी.डी.एफ, अमूल, मेहसाना डेयरी आदि द्वारा किया गया। राजस्थान कृषि महाविघालय के अधिकांश छात्र सरकारी क्षेत्र में तथा कुछ छात्रों को राष्ट्रीयकृत बैंक एवं प्राइवेट बैंक द्वारा चयनित किया गया। गृह विज्ञान महाविद्यालय की छात्राओं का चयन भी एस.ए.यू., एन.जी.ओ. तथा अन्य एजेन्सियों द्वारा किया गया।

अनुसंधान

विश्वविद्यालय में अनुसंधान ढांचे के अन्तर्गत दो कृषि अनुसंधान केन्द्र, दो कृषि अनुसंधान उप–केन्द्र तथा एक बारानी खेती अनुसंधान केन्द्र शामिल हैं। विश्वविद्यालय में अनुसंधान गतिविधियों का संचालन राजस्थान सरकार, भारत सरकार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् व अन्य संस्थाओं के वित्तीय पोषण द्वारा हो रहा है। वर्तमान में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्त पोषित 31 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएँ चल रही हैं जिनमें फसल उत्पादन, प्रचलित किस्मों में सुधार व फसल उत्पादन एवं फसल संरक्षण प्रौद्योगिकी, कृषि यंत्रीकरण, जल प्रबन्धन, नवीनीकृत ऊर्जा, कटाई उपरान्त तकनीक, गृह विज्ञान, मुर्गी पालन आदि से सम्बन्धित अनुसंधान का कार्य संचालित हो रहा है। इसके अलावा अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के सात स्वैच्छिक केन्द्र हैं, एक नीति उन्मुख परियोजना भारत सरकार के कृषि मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित है जो खेती की लागत पर है। अन्य तदर्थ परियोजनाएँ विभिन्न एजेन्सियों द्वारा वित्त पोषित हैं जैसे डी.एस.टी., डी.बी.टी., आर.के.वी.वाई, निजी कम्पनियाँ इत्यादि जो कि विश्वविद्यालय की संघटक इकाइयों में आवश्यकतानुसार अनुसंधान हेतु संचालित हो रही हैं।

अनुसंधान के क्षेत्र में विश्वविद्यालय की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ रही हैं। मुझे यह बताते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि वर्ष 2015–16 कृषि अनुसंधान के लिए विशेष रहा है। ज्वार पर अखिल भारतीय समन्वित परियोजना को राष्ट्रीय स्तर पर उच्च कोटि के प्रदर्शन के लिए उत्कृष्ट केन्द्र के सम्मान से पुरस्कृत किया गया है।

विश्वविद्यालय ने इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है जिसमें सेंसर आधारित स्वचालित स्प्रेयर, ट्रैक्टर संचालित पॉलीथीन पलवार बिछावन मशीन, बिजली संचालित लहसुन तना और जड़ कटिंग मशीन, मूंगफली थ्रेसर, कपास निकालने की मशीन, हल्के वजन के पॉवर वीडर, मूंगफली खोदने की मशीन, मोटर संचालित मूंगफली डिकोरटीकेटर आदि कई मशीनों का परीक्षण कर प्रक्षेत्र उपयोग हेतु सिफारिश की गई।

अनुसंधान परिषद् एवं क्षेत्रीय बैठकें : अनुसंधान परिषद् की बैठक 13 जुलाई, 2016 को सम्पन्न हुई जिसकी अध्यक्षता मप्रकृप्रौविवि, उदयपुर के माननीय कुलपति प्रो. उमा शंकर शर्मा ने की। इस बैठक में डॉ. एन. सी. पटेल, कुलपति, आनन्द कृषि विश्वविद्यालय, आनन्द (गुजरात) एवं डॉ. एस. एन. शर्मा, अधिष्ठाता, एस.के.एन.कृषि महाविद्यालय, जोबनेर (जयपुर) उपस्थित थे। इनके अलावा समस्त अधिष्ठाता, निदेशक तथा कृषि विभाग के अधिकारी भी उपस्थित रहे।

रबी और खरीफ के लिए 2015 में क्षेत्रीय अनुसंधान बैठक उदयपुर में क्रमशः 9–10 सितम्बर, 2015 तथा 2–3 मार्च, 2016 को आयोजित की गई एवं बांसवाड़ अनुसंधान केन्द्र पर क्रमशः 2–3 सितम्बर, 2015 एवं 9–10 मार्च, 2016 को आयोजित की गई।

नई अनुसंधान परियोजनाएँ एवं कार्य उत्पादन इकाईयाँ : इस वर्ष राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा 12 अनुसंधान परियोजनाओं के तहत 7.0 करोड़ रूपये स्वीकृत किये गये हैं। विश्वविद्यालय द्वारा मक्का की प्रताप मक्का संकर–3, प्रताप मक्का–9 और कुल्थी की एके–53 किस्म का विकास किया गया। इसके अतिरिक्त वर्ष 2015–16 में 4442 क्विंटल गुणवत्ता बीज का उत्पादन किया गया तथा मछली के 417 लाख स्पान, 25 लाख फ्राई और 13.4 लाख फिंगरलिंग का उत्पादन कर किसानों को वितरित किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई मुर्गी की उन्नत प्रजाती प्रतापधन के 1.0 लाख चूजों का उत्पादन कर किसानों को वितरित किया गया। वर्ष 2015–16 के दौरान् तरल एवं ठोस बायोफर्टीलाइजर इकाई की स्थापना की गई, जिसकी उत्पादन क्षमता 25000 पैकेट्स प्रतिवर्ष हैं। इसी के साथ विश्वविद्यालय में नैनो अनुसंधान प्रयोगशाला भी स्थापित की गई।

कार्यशाला/सम्मेलनों का आयोजन : इस वर्ष जैविक खेती पर आई.सी. आर. की वार्षिक समूह बैठक और अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की कृषि में एर्गोनोमिक्स एवं सुरक्षा वार्षिक समीक्षा बैठक आयोजित हुई। साथ ही कृषि प्रसंस्करण में उद्यमिता विकास पर एक मॉडल प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा 24 प्रशिक्षण कृषक एवं कृषक महिलाओं, कृषि पर्यवेक्षकों के लिए भी आयोजित किए गए।

प्रसार शिक्षा

किसानों के लिए विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई प्रसार सेवाओं में विभिन्न स्तरों पर क्षमता निर्माण के लिए प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी आंकलन एवं शोधन, प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों और अन्य प्रसार गतिविधियों जैसे कृषि विज्ञान मेलों, क्षेत्र का दौरा, प्रदर्शनियों, प्रौद्योगिकी सप्ताह, प्रकाशन आदि को किसानों और क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के ज्ञान सशक्तिकरण के लिए शामिल किया गया।

विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा तंत्र को भारत के जोन–VI में उत्तम अंकित किया गया है एवं इसके अधिनस्थ तीन कृषि विज्ञान केन्द्रों को श्रेष्ठ कृषि विज्ञान केन्द्र का पुरस्कार पिछले तीन वर्षों से प्राप्त हो रहा है। कृषि विज्ञान केन्द्र के विभिन्न वैज्ञानिकों को जिला स्तर एवं विश्वविद्यालय द्वारा इस वर्ष सम्मानित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़े प्रगतिशील कृषकों को लगातार चार वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर जगजीवन राम अभिनव पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

प्रशिक्षण

निदेशालय द्वारा अधिकारियों के कौशल विकास हेतु 2 राष्ट्र स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम ''उद्यमी किसानों को व्यवसाय समूह में प्रेरित करने हेतु प्रबन्ध तकनीक'' विषय पर आयोजित किये गये जिसमें कई राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न करने हेतु एक नवाचार कार्यक्रम भी चलाया गया, जिसमें 38 प्रतिभागियों ने भाग लिया। 3 अन्तःराज्यीय प्रशिक्षण कार्यक्रम उड़िसा सरकार के अधिकारियों के लिए आयोजित किये गये, जिसमें 58 अधिकारियों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों की क्षमता विकास हेतु तीन दिवसीय दो प्रशिक्षण बायो–इंटेनसिव कीट प्रबंधन एवं एग्री–ट्यूरीज्म विषय पर आयोजित किये गये जिसमें 30 विषय विशेषज्ञों ने भाग लिया। कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा इस वर्ष कुल 437 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिसमें 1531 कृषकों, कृषक महिलाओं एवं ग्रामीण युवाओं को लाभान्वित किया गया।

प्रथम पंक्ति प्रदर्शन

इस वर्ष कृषि विज्ञान केन्द्रों ने 2732 कृषकों के यहां 359 हेक्टर में प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगाये। यह प्रदर्शन खाद्यान्न, तिलहन, दलहन, सब्जियां, मसाला फसलों पर आधारित थे एवं इनमें 14 से 136 प्रतिशत उपज में वृद्धि पायी गयी। यह प्रदर्शन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, टी.एस.पी. द्वारा प्रायोजित थे।

विशिष्ट परियोजनाएं :

वर्ष 2015–16 के दौरान राष्ट्रीय कृषि विकास परियोजना की न्यूट्री फार्म के पायलट योजना के अन्तर्गत खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन के समूह प्रदर्शन, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (तिलहन), सुगन्धित एवं औषधीय पादपों की खेती तथा आदिवासी ग्रामीण युवओं का कृषि के प्रति आकर्षण एवं ठहराव (ARYA) आदि परियोजनाओं को विभिन्न जिलों में संचालित किया गया।

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र

विश्वविद्यालय के कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र ने इस वर्ष पपीता (3.6 किलो), अलसी (39 किलो), सीमारूबा (75 किलो), मिर्ची (9.1 किलो), तिल (250 किलो), जई (180 किलो) का बीज तथा 2290 मुर्गीयाँ किसानों को उपलब्ध करवाये गये। कुल 2579 किसानों को तकनीकी सेवाएं प्रदान की गई एवं 1193 तकनीकी उत्पाद वितरित किये गये। केन्द्र द्वारा कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए 40 अन्तर्राज्यीय स्तर के भम्रण कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

किसान संगोष्ठी

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा दिनांक 24 दिसम्बर, 2015 को विश्वविद्यालय द्वारा चयनित स्मार्ट विलेज ग्राम उंडीथल ग्राम पंचायत छाली में एक किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल श्री कल्याण सिंह जी एवं विशिष्ट अतिथि माननीय सांसद उदयपुर श्री अर्जुन लाल मीणा थे। इस कार्यक्रम में 931 उपस्थित किसानों ने सीधे राज्यपाल महोदय से संवाद किया।

जय जवान जय किसान सप्ताह

विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 23–29 दिसम्बर, 2015 को एम.पी. द्वारा गोद लिये गये गांव बांकरा, नागरी, सुरवानिया, पालिया कनवा एवं जासोल में जय जवान जय किसान सप्ताह आयोजित किया गया। इस अवसर पर आयोजित किसान गोष्ठी में 578 किसानों एवं ग्रामीण महिलाओं ने भाग लिया।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 1–5, अप्रेल 2016 को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना पर जागरूकता शिविर आयोजित किये गये, जिसमें 7838 किसानों एवं किसान महिलाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर श्री सी.पी. जोशी, लोकसभा सदस्य चित्तौड़गढ़, श्री एम. नीनामा, लोकसभा सदस्य डूंगरपुर, बांसवाड़ा एवं श्री हरि ओम सिंह राठौड़, लोक सभा सदस्य राजसमन्द एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कृषि विज्ञान मेला

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा दिनांक 17 से 19 मार्च 2016 को राज्य स्तरीय तिलहन कृषि विज्ञान मेला "तिलहनों के उन्नत उत्पादन तकनीकी द्वारा स्वावलंबन" विषय पर राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर के प्रांगण मे आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न जिलों के करीब 5000 कृषकों, कृषक महिलाओं एवं युवाओं ने भाग लिया। यह मेला एन.एम.ओ.ओ.पी. के अन्तर्गत कृषि निदेशालय राजस्थान सरकार, जयपुर द्वारा प्रायोजित था।

प्रसार गतिविधियाँ

निदेशालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा एक कृषि विज्ञान मेला, 37 प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किये गये जिसमें 5694 कृषक एवं कृषक महिलाएँ लाभान्वित हुए। अन्य प्रसार गतिविधियों के अन्तर्गत 43 किसान गोष्ठी आयोजित की गयी जिसमें 7196 कृषकों को लाभान्वित किया गया। 9 प्रर्दशनियां लगायी गई जिसमें 6502 कृषक एवं कृषक महिलाएँ

लाभान्वित हुई और 8 पशु चिकित्सा शिविर लगाये गये, जिसमें 667 पशुओं का उपचार किया गया।

प्रकाशन

निदेशालय द्वारा मासिक पत्रिका "राजस्थान खेती–प्रताप" का प्रकाशन किया जाता है। वर्तमान में राजस्थान खेती के 2000 से अधिक सदस्य हैं। निदेशालय व केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा 63 अनुसंधान पत्र व 128 लेख विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित कराये गये। इसके अतिरिक्त 08 तकनीकी मार्गदर्शिका व 07 प्रशिक्षण मेनयुअल भी कृषकों को लाभान्वित कराने के उद्देश्य से प्रकाशित किये गये।

प्रसार शिक्षा परिषद् बैठक

17 वीं प्रसार शिक्षा परिषद् की बैठक 22 जून, 2016 को आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. उमाशंकर जी द्वारा की गई एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. पी.के. दशोरा, कुलपति, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा एवं प्रो. पी.एस. राठौड़, कुलपति, कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर थे। इस बैठक में महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक एवं विभागाध्यक्षों एवं नामांकित प्रगतिशील कृषक उपस्थित थे। बैठक में प्रसार शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने हेतु नीतिगत निर्णय लिये गये।

अन्य उपलब्धियाँ

सांविधिक बैठकें : पिछले वर्ष के दौरान शैक्षणिक परिषद् की चार बैठकें 21.5.2016, 14.6.2016, 3.8.2016 एवं 14.12.2016 को आयोजित की गई। इस अवधि के दौरान प्रबंधन बोर्ड की तीन बैठकें 17.6.2016, 12.8.2016 एवं 22.12.2016 को आयोजित की गई।

विदेश भ्रमण : शैक्षणिक, अनुसंधान और अन्य काम के लिए अलग–अलग देशों के लिए संकाय सदस्यों ने विदेश यात्राएं की। डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय से डॉ. एल.के. मुर्डिया, अधिष्ठाता ने जर्मनी तथा डॉ. विनोद सहारण, सहायक प्राध्यापक, राजस्थान कृषि महाविद्यालय ने बीजींग, चीन का भ्रमण किया।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहमति पत्र (MoU) : अनुसंधान और शैक्षिक गतिविधियों को मजबूती प्रदान करने के लिए विभिन्न सरकारी एवं निजी एजेंसियों के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए गये। ड्यू पॉइन्ट पायनियर, इंडिया, मेसर्स एमबियो लिमिटेड, मुम्बई, एफसीआई, अरावली जिप्सम एवं मिनरल्स इंडिया लिमिटेड जैसे सहमति पत्र प्रमुख हैं। साथ ही अन्य समझौते हैं मेसर्स बांसवाड़ा बायोमॉस बायोएनर्जी प्रा. लि., बैंगलोर, परमार्थ संस्थान, उदयपुर, वैंकटेश एग्री इण्डस्ट्री, कर्नाटका, सन्तराम आइसक्रीम आनन्द, गुजरात, राज्य कृषि विभाग, उत्तर बस्तर, छत्तीसगढ़, घूमर महिला समिति, पाली इत्यादि। इसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय समझौते युनिवर्सिटी ऑफ सिडनी, आस्ट्रेलिया से आई डब्ल्यू एम आई, कोलम्बो, श्रीलंका के माध्यम से भू–जल प्रबंधन हेतु, सेंट लूईस के वाशिंगटन विश्वविद्यालय नैनो कृषि शोध हेतु तथा टीम एक्सीलेन्स दक्षिण आस्ट्रेलिया से कृषि विकास में सहयोग बढ़ाने के लिए किए गये।

पुरस्कार

संकाय पुरस्कार : इस सत्र में प्रौद्योगिकी एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालय के डॉ. जी.एस. भारद्वाज को गुणवत्ता शिक्षा पुरस्कार किंगसन ग्रुप ऑफ ऐजूकेशन, उदयपुर तथा ग्लोबल मैनेजमेंट कॉंसिल, अहमदाबाद द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान किया। डॉ. भारद्वाज को जिज्ञासा, 2016 जबलपुर में सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ के पुरस्कार से भी नवाजा गया। इसी महाविद्यालय के डॉ. एस.एम. माथुर को जिला स्तर पर कलेक्टर द्वारा प्रशस्ति–पत्र से सम्मानित किया गया तथा डॉ. एन.एल. पंवार को एम.एन.ई.एस. द्वारा सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र के लिए पुरस्कार मिला। डॉ. के.के. यादव को जल पर्यावरण ऊर्जा समिति द्वारा योग्यता प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया।

कुलपति चल वैजयंती खेलकूद प्रतियोगिता : तेरहवीं कुलपति चल वैजयंती खेलकूद प्रतियोगिताएँ संयुक्त रूप से प्रसार शिक्षा निदेशालय केन्द्रीय गैर–शिक्षण स्टाफ एसोसिएशन, एम.पी.यू.ए.टी., उदयपुर एवं नॉन–टीचिंग स्टाफ एसोसिएशन, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर ने आयोजित करवाई जिसमें विश्वविद्यालय के समस्त गैर–शैक्षणिक स्टाफ ने भाग लिया।

आगामी कार्य योजनाएँ

- मक्का, ज्वार, सोयाबीन, मूंगफली, चना, उड़द एवं अन्य महत्वपूर्ण फसलों की अधिक उपज देने वाली किस्मों एवं संकर किस्मों का विकास।
- जलवायु अनुरूप कृषि पर अनुसंधान।
- वर्षा जल संचयन और उसके कुशल उपयोग के लिए आर्थिक रूप से व्यावहार्य प्रौद्योगिकियों का विकास।
- गेहूँ को पकाव के समय अधिक तापमान में उत्पादन बनाए रखने पर अनुसंधान।
- कृषि में डिजिटलीकरण को बढ़ावा।
- कृषि उत्पादन के प्रसंस्करण के लिए मशीनों का विकास।
- लघु फार्म मशीनीकरण।
- मुर्गीपालन की उन्नत प्रजाति का गुणन करना तथा घर–आंगन मुर्गीपालन को बढ़ावा।
- जैविक कृषि के लिए फसल, सब्जियों एवं फल उत्पादन की तकनीकों का विकास।
- कीट और रोग प्रबंधन के लिए पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकी का विकास।
- उर्जा नवीनीकरण तकनीकों का विकास।
- उद्यमिता विकास व ज्ञान सशक्तिकरण के माध्यम से आजीविका की सुरक्षा के लिए क्षमता निर्माण।
- स्थान विशिष्ट एकीकृत कृषि मॉडल का विकास।
- छोटे, सीमांत व भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को कुशल श्रमिक बनाने हेतु क्षमता निर्माण के कार्यक्रम।
- किसानों द्वारा उन्नत बीज उत्पादन को बढ़ावा देना।

- लाभप्रदता, स्थिरता और निर्यात के अवसरों को सुनिश्चित करने के लिए एसएचजी, किसानों/सहकारी समितियों/कृषक/कृषक महिला क्लब समूह निर्माण को बढ़ावा।
- ग्रामीण व आदिवासी महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए उद्यमिता विकास।

माननीय महोदय, पिछले 23 दिसंबर, 2015 के दीक्षांत समारोह के बाद से यह हमारी कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ एवं प्राथमिकताएँ हैं। हम अपने देश में सभी राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के मिशन के साथ आगे बढ़ रहे हैं। हम न केवल आगे की चुनौतियों के प्रति संवेदनशील हैं, अपितु दृढ़ संकल्पता के साथ चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

मैं सभी डिग्री एवं स्वर्ण पदक प्राप्तकर्ताओं को अग्रिम बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि वे अपने संबंधित क्षेत्रों में योग्य उद्यमी, वैज्ञानिक तथा पेशेवर साबित होंगे। मैं उनसे यह आग्रह करता हूँ कि वे अपने संबंधित कॉलेज के अधिकारियों और विभागों को उत्कृष्टता का केंद्र बनाने के लिए उदारता से अपनी राय दें।

मैं एकबार पुनः माननीय श्री कल्याण सिंह जी को उनके द्वारा इस विश्वविद्यालय के प्रति सतत् सरोकार व सम्बल देने के लिए एवं इस अवसर पर यहाँ पधारने के लिए कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। मैं यहाँ उपस्थित सभी अतिथियों, स्टाफ एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस विश्वविद्यालय, जिसकी स्थापना प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप की स्मृति में की गयी, के 10वें दीक्षांत समारोह में सम्मिलित होकर इसकी शोभा बढ़ाई।

।। जय हिंद ।।